P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-XI*July-2016

विषम लिंगानुपातः एक विश्लेषण

श्रमवीर सिंह कुशवाह
वरिष्ठ प्रवक्ता,
समाजशास्त्र विभाग,
आर0बी0एस0 कॉलेज,
आगरा

सारांश

प्राचीन काल में महिलाओं की स्थिति अच्छी थी। वैदिककाल में उनका बड़ा सम्मान था। लेकिन धीरे–धीरे उनकी स्थिति में निरंतर गिरावट आती चली गई। स्वतंत्रता के पश्चात् महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए प्रयास भी हुए पर वांछित परिणाम न आ पाए है। विषम लिंगानुपात एवं घटता बाल लिंगानुपात महिलाओं के विरूद्व भेदभाव का स्पष्ट संकेत है। भारत में लिंगानुपात में भारी विषमता है। कुछ राज्यों में तो स्थिति अत्यन्त चिन्ताजनक है। देश में घटता बाल लिंगानुपात तो और भी अधिक गंभीर मामला है। इनके कई कारण हैं यदि विषम लिंगानुपात एवं घटते बाल लिंगानुपात पर नियंत्रण न किया गया तो भविष्य में कई दुष्परिणाम हमारे सामने होंगे।

मुख्य शब्द : लिंगानुपात, बाल लिंगानुपात, विषम लिंगानुपात, सामाजिक स्थिति, सामाजिक सरंचना, कन्या भ्रूण हत्या, पितृ सत्तात्मक परिवार, असंतुलन, लिंग परीक्षण।

प्रस्तावना

मनुस्मृति में कहा गया है कि जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। प्राचीन काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति अच्छी थी लेकिन धीरे–धीरे उनकी स्थिति में गिरावट आती चली गई। महिला और पुरूष गाड़ी के दो पहिओं के समान हैं, जब तक दोनों में समानता नहीं होगी, गाड़ी सुचारू रूप से आगे नहीं बढ़ सकती। वर्तमान में विषम लिंगानुपात एक बड़ी समस्या है। यद्यपि हमारे देश में लिंगानुपात में कुछ वृद्धि हुई है, पर बाल लिंगानुपात की स्थिति अत्यन्त चिन्तनीय है। इसके कई गम्भीर दुष्परिणाम हो सकते हैं, जो सामाजिक व्यवस्था के लिए ठीक नहीं है।

उद्देश्य

विषम लिंगानुपात की स्थिति का विश्लेषण करना।

नारी की स्थिति

जिस समाज में महिलाओं की प्रस्थिति उच्च होती है, वह समाज की प्रगति का प्रतीक है। भारतीय समाज में वैदिक काल में नारी का स्थान अति सम्मानजनक था। भारत विदुषी नारियों के लिए जाना जाता था।[1] वैदिक कालीन समाज महिला एवं सशक्तिकरण का स्वर्णयुग था। गार्गी, मैत्रयी, घोषा, अपाला व लोपामुद्रा जैसी कई विदुषी नारियाँ तत्कालीन समाज की गौरवशाली परम्परा की प्रतीक हैं। स्वयंवर से लेकर उपनयन व अन्तिम संस्कार तक महिलाओं की सहभागिता के पर्याप्त प्रमाण प्राचीन ग्रन्थों में हर जगह उपलब्ध है।[2]

कदाचित् महिला सम्मान में गिरावट का प्रारम्भ उत्तर स्मृतिकालीन काल से माना जा सकता है। जब महिलाओं के जीवन को पिता, पति एवं पुत्र के अधीन कर दिया गया। महिलाओं के सम्मान एवं स्वतंत्रता की समाप्ति की दिशा में यह प्रथम सोपान था।[3]

मध्ययुग आते–आते महिलाओं की स्थिति में और गिरावट आती गई। विदेशी आक्रमणों से उपजी असुरक्षा में बाल–विवाह, सती प्रथा, जौहर एवं पर्दा प्रथा जैसी कई कुरीतियाँ समाज में उत्पन्न हो गई।[4]

अंग्रेजों के शासनकाल में भी महिलाओं की स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ। यद्यपि छोटे–मोटे प्रयास जरूर हुए। स्वतंत्रता के पश्चात् महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए अनेक प्रयास किये पर जो परिवर्तन आने थे वे अभी तक प्राप्त नहीं हो पाये।[5] क्राइम इन इण्डिया, 2012 की रिपोर्ट के अनुसार देश में हर 20 मिनट में एक बलात्कार, 11 मिनट में एक छेड़छाड़, 12 मिनट में एक अपहरण और 61 मिनट में एक दहेज हत्या का अपराध होता है।[6] यह स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। किसी भी स्वस्थ समाज के लिए यह एक चुनौती है।

लिंगानुपात की स्थिति

सामाजिक संरचना महिला और पुरूष से बनती है। एक आदर्श सामाजिक संरचना में लिंगानुपात लगभग समान होना चाहिए। जनांकिकीय

दृष्टिकोण से लिंगानुपात का तात्पर्य एक हजार पुरूषों पर महिलाओं की संख्या के रूप में माना जाता है।

1975 में भारत में भ्रूण के लिंग परीक्षण की तकनीकी आ गई थी। इस पर बहस भी हुई कि इससे लिंगानुपात पर असर पड़ेगा या नहीं। कई महिला संगठनों ने इसका विरोध भी किया और कानून बनाने की बात कही। यह संदेह तब और सत्य हुआ जब 1991 में लिंगानुपात में कमी दिखलाई दी। कुछ विशेषज्ञों का मानना था कि यह देश में गत 100 वर्षों से होता आया है, पर यूनीसेफ का मानना था कि 1991 की जनगणना में स्त्रियों के अनुपात में कमी का मुख्य कारण भ्रूण हत्या है।[7]

तालिका – 1

भारत में वर्ष 1951 से 2011 तक जनगणनाओं में लिंगानुपात

जनगणना वर्ष	1951	1961	1971	1981	1991	2001	2011
लिंग अनुपात	946	941	930	935	927	933	943

तालिका नं0 1 से स्पष्ट है कि जनगणना 1981 को छोड़कर वर्ष 1951 से 1991 तक की जनगणनाओं में लिंग अनुपात की निरन्तर कमी देखी गई है, लेकिन वर्ष 2001 एवं 2011 की जनगणनाओं के लिंगानुपात में वृद्धि देखी गई है। 2001 एवं 2011 की जनगणनाओं में लिंगानुपात में सुधार होते हुए भी विषमता बनी हुई है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य स्तर पर सर्वाधिक लिंगानुपात केरल (1084), तमिलनाडु (996) एवं आंध्र प्रदेश (993) का रहा वहीं सबसे कम लिंगानुपात वाले राज्यों में हरियाणा (879), जम्मू–कश्मीर (889) एवं सिक्किम (890) रहे। बिहार (918), गुजरात (919) एवं जम्मू–कश्मीर (889) ऐसे तीन राज्य रहे जहाँ वर्ष 2011 की जनगणना में लिंगानुपात में गिरावट आई । इन राज्यों की 2001 की जनगणना के लिंगानुपात में क्रमशः 919, 920 एवं 892 था। 2011 की जनगणना के अनुसार संघ शासित प्रदेशों में सर्वाधिक लिंगानुपात पुडुचेरी (1037), लक्षद्वीप (947) का रहा वहीं सबसे कम लिंगानुपात दमन एवं दीव (618) एवं दादरा एवं नागर हवेली (774) का रहा। लेकिन दमन एवं दीव (618) दादरा एवं नागर हवेली (774) एवं लक्षदीप (947) के लिंगानुपात में गिरावट देखी गई। इन केन्द्रशासित राज्यों में जनगणना 2001 में लिंगानुपात क्रमशः 710, 812 एवं 948 था।

भारत में 0–6 वर्ष आयु समूह में प्रति हजार बालकों पर बालिकाओं की संख्या को बाल लिंगानुपात कहते है।

तालिका – 2

भारत में बाल लिंगानुपात

जनगणना वर्ष	1961	1971	1981	1991	2001	2011
बाल लिंगानुपात (0–6 आयु समूह)	976	964	962	945	927	919

तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि 1961 से 2011 तक लगातार बाल–लिंगानुपात में कमी आती जा रही है। सबसे अधिक बाल लिंगानुपात वाले राज्यों में प्रमुख हैं – अरूणाचल प्रदेश (972), मिजोरम/मेघालय (970) छत्तीसगढ़ (969) एवं सबसे कब बाल लिंगानुपात वाले राज्यों में प्रमुख हैं – हरियाणा (834),पंजाब (846) एवं जम्मू–कश्मीर (862)। सबसे अधिक बाल लिंगानुपात वाले केन्द्र शासित प्रदेश हैं – अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह (968), पुडुचेरी (967), दादरा एवं नागर हवेली (926) जबकि सबसे कम बाल लिंगानुपात वाले केन्द्र शासित राज्य हैं – राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली (871), चण्डीगढ़ (880) एवं दमन एवं दीव (904) हैं।

वर्ष 2001 में कुल जनसंख्या का करीब 16 प्रतिशत बच्चे 0–6 आयु वर्ग में थे, लेकिन 2011 में इनकी संख्या घटकर 13 प्रतिशत हो गई।[8]

विषम लिंगानुपात के कारण

विषम लिंगानुपात के कुछ प्रमुख कारण है

1. विषम लिंगानुपात के उत्तरदायी कारणों में कन्या भ्रूण हत्या प्रमुख हैं। पहले कभी भारत के कई क्षेत्रों में बालिकाओं को जन्म लेते ही मार दिया जाता था लेकिन अब ऐसी घटनाएँ आमतौर पर सामने नहीं आती हैं। लेकिन अब उनका स्थान कन्या भ्रूण हत्या ने ले लिया है। वर्तमान में कन्या भ्रूण हत्या की वजह से बाल लिंगानुपात में विषमता बढ़ती जा रही है। संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार समिति के अनुसार एशियाई देशों विशेषकर भारत एवं चीन में 11 करोड़ 70 लाख कन्याओं की भ्रूण हत्या कर दी गई। भारत में प्रति वर्ष 1 करोड़ 12 लाख गर्भपात होते हैं, जिनमें 67 लाख स्वाभाविक न होकर प्रेरित होते हैं, जो बालिका भ्रूण हत्या के निमित्त होते है।[9]
2. भारत में प्रायःपितृसत्तात्मक परिवार पाये जाते हैं। पितृसत्तात्मक परिवारों की पितृ परम्पराओं में पुरूष को प्रधानता मिलती है। पितृ ऋण से उऋण होने के लिए पुत्र प्राप्ति को अनिवार्य बताया गया। पुरूष को वंश को आगे बढ़ाने वाला बताया गया। फलस्वरूव समाज में लड़कों की चाहत अधिक है।[10]
3. भारत में आज भी कई कन्याओं के विवाह बाल्यावस्था में होते हैं। जनगणना के ताजा आँकड़ों के अनुसार देश में डेढ़ करोड़ से ज्यादा कन्या बाल वधु हैं, जिनके 60 लाख बच्चे हैं।[11]कम उम्र में बालिकाओं के विवाह होने से कई बालिका वधुओं की मृत्यु बच्चे के जन्म के समय हो जाती है। अभी भी भारत में सबसे अधिक जननी की मृत्यु होती है। वर्ष 2013 में भारत में 50000 मातृत्व मृत्यु हुई है।[12]
4. स्वास्थ्य की दृष्टि से भी महिलाओं की स्थिति निम्न है। आमतौर पर भारतीय समाज में बालक की तुलना में बालिकाओं का पोषण उचित तरीके से नहीं होता। आँकड़े बताते हैं कि 56.1 प्रतिशत महिलाओं में किसी न किसी वजह से खून की कमी है।[13]देश में 50 प्रतिशत लड़कियाँ 1से 5 वर्ष तक कुपोषण से पीड़ित हो जाती हैं। लड़कों की तुलना में लड़कियों को पोषण के मामले में कम ध्यान दिया जाता है।[14]
5. देश की कानून व्यवस्था की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। महिलाओं के विरूद्व अपराध निरन्तर बढ़ते जा रहे है।[15] सरकारी योजनाएँ भी कन्या के जन्म को प्रोत्साहित करने में ज्यादा प्रभावी नहीं हुई है।[16]
6. समाज में लड़कियाँ एवं महिलाएं असुरक्षित है। आये दिन महिलाओं से छेड़छाड़, यौन उत्पीड़न, अपहरण, बलात्कार, आत्म हत्या और हत्याओं आदि भी महिलाओं की संख्या में कमी लाकर लिंगानुपात को विषम बनाने में सहायक है।[17]

7. समाज में प्रचलित मान्यताओं के अनुसार बेटियों को पराया धन माना जाता है। इस कारण से कई बार उनकी देखभाल में कमी देखी जाती है। दहेज की समस्या भी भारतीय समाज में विकराल होती जा रही है। कुछ माता–पिता बेटियों को अपने ऊपर भार समझते है।[18]

विषम लिंगानुपात के परिणाम

1. कन्या भ्रूण हत्या इसी तरह होती रही तो निश्चित ही निकट भविष्य में लिंगानुपात में असंतुलन बना रहेगा। ऐसे में समस्त सामाजिक संरचना में असंतुलन उत्पन्न हो जायेगा। भविष्य में विवाह के लिए कन्याओं का अभाव उत्पन्न हो जायेगा।[19]
2. अविवाहित पुरूषों की संख्या बढ़ने से वेश्यावृत्ति को प्रोत्साहन मिलेगा।[20]
3. लिंगानुपात के असंतुलन से महिलाओं के अपहरण की घटनाएँ बढ़ सकती है।[21]
4. समलैंगिकता बढ़ सकती है।
5. जब समाज में महिलाओं की संख्या पुरूषों से कम होती है तो बहुपति विवाह को प्रोत्साहन मिल सकता है।
6. बेमेल विवाह बढ़ जायेंगे।

निराकरण के उपाय

भारत में लिंगानुपात की विषम स्थिति अत्यन्त गम्भीर समस्या है। घटता लिंगानुपात तो और भी अधिक चिन्तनीय है, यदि वर्तमान में लिंगानुपात की स्थिति में सुधार न किए गए तो भविष्य में बड़े संकट सामने होंगे। विषम लिंगानुपात एवं बाल–लिंगानुपात की स्थिति सुधारने के लिए निम्न प्रयास किये जा सकते है।

1. लिंग परीक्षण निषेध अधिनियम 1994 को सख्ती से लागू किया जाए। दोषी व्यक्तियों को कठोर सजा सुनिश्चित की जाए।
2. बाल विवाह पर प्रभावी ढंग से रोक लगाना चाहिए।
3. महिलाओं के लिए सुरक्षित वातावरण तैयार हो।
4. महिलाओं को शिक्षित करना होगा ताकि वे अपने अधिकारों को समझ सकें।
5. पुरानी सामाजिक कुरीतियों को दूर करना होगा।
6. कन्याओं के रक्षार्थ प्रचलित सरकारी योजनाएं प्रभावी ढंग से क्रियान्वित हों।
7. शिक्षा एवं स्वरोजगार में आर्थिक सहायता की जाये।

निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि वर्तमान में भी लिंगानुपात में विषमता बनी हुई हैं। बाल लिंगानुपात की स्थिति तो और भी गम्भीर है। इनके गम्भीर परिणाम आ रहे है। इस दिशा में ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रावत 'चंचल', बी0एस0 (2015) 'महिला सशक्तिकरणः भारत सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयास' प्रतियोगिता दर्पण, आगरा, दिसम्बर, पृ0 95–97
2. त्रिपाठी, गोपाल कृष्ण (2013) 'महिला समाख्या वैदिक युग से अब तक' प्रतियोगिता दर्पण, आगरा, फरवरी, पृ0 1072
3. वही
4. वही
5. अग्रवाल, अनिल (सम्पादक) (2013–2014) 'भारत में महिला सशक्तिकरण' परीक्षा मंथन निबन्ध श्रृंखला भाग–2, मंथन प्रकाशन, इलाहाबाद पृ0 91
6. बघेल, डॉ0 डी0एस0 (2015) 'अपराधशास्त्र' विवेक प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 165
7. राघव, डॉ0 विजय सिंह (2009) 'कन्या भ्रूण हत्या की वजह से निरन्तर न्यूनता की ओर अग्रसर होता जा रहा लिंगानुपात और इससे जनित समस्याएँ' प्रतियोगिता दर्पण, आगरा, मार्च, पृ0 1407
8. पाण्डे, गिरीश चन्द्र (2015) 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान' प्रतियोगिता दर्पण, आगरा, सितम्बर, पृ0 96
9. शर्मा, डॉ0 अर्चना (2015) 'संघर्षरत महिलाएंः चुनौतियाँ एवं समाधान' प्रतियोगिता दर्पण, आगरा, मई, पृ0 72
10. सुराना, प्रो0 ज्ञान चन्द्र (2015) 'विषम लिंगानुपात' कारण एवं निवारण' प्रतियोगिता दर्पण, आगरा, मार्च पृ0 108
11. 'बाल–वधुओं के 60 लाख बच्चे' अमर उजाला, आगरा 14 मार्च ,2015, पृ0 12
12. 'जननी सुरक्षा अभी बाकी' अमर उजाला, आगरा, 2 दिसम्बर पृ0 12
13. सारस्वत, ऋतु 'स्वास्थ्य के मोर्चे पर पिछड़ती महिलाएं' अमर उजाला, आगरा, 11 मार्च 2015, पृ0 12
14. सिंह, डॉ0 अमिता (2015) 'लिंग एवं समाज' विवेक प्रकाशन, दिल्ली पृ0 294
15. सुराना, प्रो0 ज्ञान चन्द्र (2015) 'विषम लिंगानुपातः कारण एवं निवारण', प्रतियोगिता दर्पण, आगरा, मार्च पृ0 108–109
16. वही
17. वही
18. वही
19. अग्रवाल, अनिल (सम्पादक) (2013–14) 'कन्या भ्रूण हत्या' परीक्षा मंथन निबन्ध श्रृंखला भाग–2, मंथन प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0 106
20. वही
21. वही